आलस्य और अलबेलापन - 13

अव्यक्त बापदादा :- (24. 12. 1972)

➳ _ ➳ सभी विधाता, विधान और विधि को अच्छी रीति से जान चुके हो? अगर विधाता को जाना तो विधान और विधि स्वतः ही बुद्धि में वा कर्म में आ जाती है। विधाता द्वारा आप सभी श्रेष्ठ आत्माएं विधान बनाने वाली बनी हो, ऐसा अपने को समझ कर हर कर्म करते हो? क्योंकि इस समय तुम ब्राह्मणों का जो श्रेष्ठ कर्म है वही विश्व के लिये सारे कल्प के अंदर विधान बन जाता है।

➳ _ ➳ **आप ब्राह्मणों के कर्म इतने महत्वपूर्ण हैं। ऐसे अपने हर कर्म को महत्वपूर्ण समझ कर करते हो? अपने को विधान के रचयिता समझ करके हर कर्म करना है।** सभी रीति-रस्म कब से और किन्हीं द्वारा शुरु होते हैं, जो फिर सारे कल्प में चलते आते हैं? इस समय आप ब्राह्मणों की जो रीति-रस्म, रिवाज प्रैक्टिकल जीवन के रुप में चलता है वह सदा के लिये अनादि विधान बन जाता है, ऐसे समझ कर हर कर्म करने से कभी भी अलबेलापन नहीं आवेगा।

➳ _ ➳ इस विधिपूर्वक स्मृतिस्वरुप होकर चलना है। इतनी बड़ी जिम्मेवारी समझ कर कर्म करना है - यह स्मृति रहती है? संगमयुग की यही विशेषता है जो हरेक श्रेष्ठ आत्मा को जिम्मेवारी मिली हुई है। ऐसे नहीं कि किन विशेष आत्माओं की जिम्मेवारी है, हम उन्हों के बनाये हुये विधान पर चलने वाले हैं। नहीं, हरेक आत्मा विधान बनाने वाली है, इस निश्चय से हर कर्म की सम्पूर्ण सिद्धि को पा सकेंगे। क्योंकि अपने को विधान के रचयिता समझ कर हर कर्म यथार्थ विधि से करेंगे। यथार्थ विधि की सम्पूर्ण सिद्धि अवश्य प्राप्त होती है।

➢➢ विधाता, विधान और विधि

➳ _ ➳ विधाता अर्थात विधान बनाने वाला

→ विधानसभा, विधान मंडल, विधान परिषद, विधानपति

- विधाता को जानना है, जो लॉ मेकर है

➳ _ ➳ विधान अर्थात नियम, कानून, विधि, व्यवस्था, मर्यादाएं

→ **हम सब आत्माएं विधान बनाने वाले हैं**

- फिर सारी सृष्टि उसका अनुसरण करती है
- **जो-जो कर्म हम करेंगे, जो नींव डालेंगे वही द्वापर से रीति-रस्म, परम्पराएँ बन जाएँगी**
  - **हम इधर अमृतवेला उठते हैं तो उधर वे ब्रह्ममुहुर्त में उठना चालू हो जायेगा**
  - हम मुरली सुनते हैं तो वो शास्त्र पढ़ते हैं, सत्संग करते हैं, श्रवणं
  - हम ज्ञान चर्चा करते हैं तो वो शास्त्रार्थ, ज्ञान सभा, पाठ करते हैं
  - **हम इधर अजपाजप करते हैं वो मन्त्र जाप करते हैं**
  - हम सेवा करते हैं तो वो भी निस्वार्थ कर्म, समाज सेवा करते हैं

- हम नुमाशाम का योग करते हैं वो संध्या आरती करते हैं
- हम इधर भोग लगाते हैं वो भी भोग लगाते हैं
- हम इधर भगवान की महिमा करते हैं वो आरती, पूजा करते हैं
- हम गुणगान करते हैं उनका कीर्तनं
- हमारा ज्ञान है तो वो नौधा भक्ति करते हैं
- हम याद करते हैं उनका स्मरणं
- हम सेवा करते हैं उनका पादसेवनम, वन्दनं, अर्चनम
- हम सम्पूर्ण समर्पण करते हैं उनका आत्मनिवेदन
- हम भगवान से सर्व सम्बन्ध जोड़ते हैं उनकी सखा भक्ति शुरू होगी, मधुरा भक्ति- भगवान को पति समझना,
- हम वर्ल्ड सर्वेंट हैं उनकी दास्य भक्ति, शांत भक्ति- वो सृष्टि का नियन्ता है, हम उसकी संतान
- भगवान को सकाम भाव से याद करते, वो भी फरियाद करते
- ब्राह्मणों को ब्रह्मा भोजन प्रिय है, उधर ब्राह्मण भी भोजन प्रिय हैं
- इधर हलवा, उधर श्राद्ध
- सेवा से हमें दुआएं मिलती हैं और भक्ति में आशीर्वाद, दुआएं देते हैं
- **हम आत्मा की ज्योति जगाते हैं वो स्थूल दिवाली मनाते**
- हम देहभान, मैं को डुबोते हैं वो मूर्तियों को डुबोते हैं

➳ _ ➳ ब्राह्मणों के कर्म इतने महत्वपूर्ण हैं

→ उमंग-उत्साह से ऐसी सेवा करनी है जो भी सम्पर्क में आयें उन सबकी दुआएं मिल जाए

- उसका साधन है हाँजी का पाठ पक्का करना
- संतुष्टता की दुआएं लेनी हैं
- **जिनको दुआएं मिल जाएँ तो**
  - **मेहनत समाप्त हो जाएगी**
  - स्वतः ही महान बन जाते हैं
  - दुआएं लेना दुआएं देना सहज पुरुषार्थ है

➳ _ ➳ **हम जो भी कर्म कर रहे हैं वो अनादि विधान बनने वाला है**

→ इसे सारी दुनिया फालो करेगी

- ऐसा समझने से अलबेलापन नहीं आएगा

➳ _ ➳ विधिपूर्वक स्मृति स्वरुप होकर चलना है

→ संगमयुग की यही विशेषता है

- जिम्मेवारी का ताज सबको मिला है
- अभी-अभी पुरुषार्थ अभी-अभी प्रालब्ध
- हरेक आत्मा विधान बनाने वाली है

➳ _ ➳ **जो भी कर्म चाहे जितना भी छोटा हो विधि से करना है**

→ क्योंकि बाप राईटियस कर्म बताते हैं

➳ _ ➳ **हमारी श्रेष्ठ अवस्था ही व्यवस्था को जन्म देगी**

अव्यक्त बापदादा :- (04.05.1973)

➳ _ ➳ लक्ष्य तो सभी का फर्स्ट का है ना? लास्ट में भी अगर आये तो क्या हर्जा, ऐसा लक्ष्य तो नहीं है ना? अगर यह लक्ष्य भी रखते हैं कि जितना मिला उतना ही अच्छा तो उसको क्या कहा जावेगा? ऐसी निर्बल आत्मा का टाइट्रल कौन-सा होगा? ऐसी आत्माओं का शास्त्रों में भी गायन है। एक तो टाइटिल बताओ कौनसा है, दूसरा बताओ उनका गायन कौन-सा है? ऐसी आत्माओं का गायन है कि जब भगवान् ने भाग्य बाँटा तो वे सोये हुए थे। अलबेलापन भी आधी नींद है। **जो अलबेलेपन में रहते हैं, वह भी नींद में सोने की स्टेज है।**

➳ _ ➳ अगर अलबेले हो गये तो भी कहेंगे कि सोये हुए थे? **ऐसे का टाइटिल क्या होगा? ऐसे को कहा जाता है - 'आये हुए भाग्य को ठोकर लगाने वाले'।** भाग्यविधाता के बच्चे भी बने अर्थात् अधिकारी भी बने, भाग्य सामने आया अर्थात् बाप भाग्यविधाता सामने आया। सामने आये हुए भाग्य को बनाने की बजाय ठोकर मार दी तो ऐसे को क्या कहेंगे? - 'भाग्यहीन'। वे कहीं भी सुख नहीं पा सकते। ऐसे तो कोई बनने वाले नहीं हैं ना? अपनी तकदीर बनाने वाले हो? जैसी तकदीर बनायेंगे वैसा भविष्य प्रारब्ध रुपी तस्वीर बनेगी।

➢➢ लक्ष्य

➳ _ ➳ अगर लक्ष्य रखते हैं कि जितना मिला उतना ही अच्छा तो उसको कहा जायेगा

→ अलबेलापन

→ आलस्य

→ ढीला, ठंडा पुरुषार्थ

→ समय की पहचान नहीं

→ सुस्त महादेव

➳ _ ➳ ऐसी निर्बल आत्माओं का टाइटल है

→ आये हुए भाग्य को ठोकर लगाने वाले

→ दुर्भाग्यशाली

→ भाग्यहीन

➳ _ ➳ ऐसी आत्माओं का गायन है -

→ भाग्यविधाता ने भाग्य बांटा तो सोये हुए थे

- भाग्यविधाता के बच्चे भी बने, अधिकारी भी बने
  - सामने आये हुए भाग्य को ठोकर मार दी

- वे कहीं भी सुख नहीं पा सकते

➳ _ ➳ **अलबेलापन भी आधी नींद है**

➳ _ ➳ तकदीर बनाने वाले बनना है

→ **जैसी तकदीर बनायेंगे वैसा भविष्य प्रारब्ध रुपी तस्वीर बनेगी**